Let us breathe the fragrance divine

दिव्य सौरभ की अनुभूती

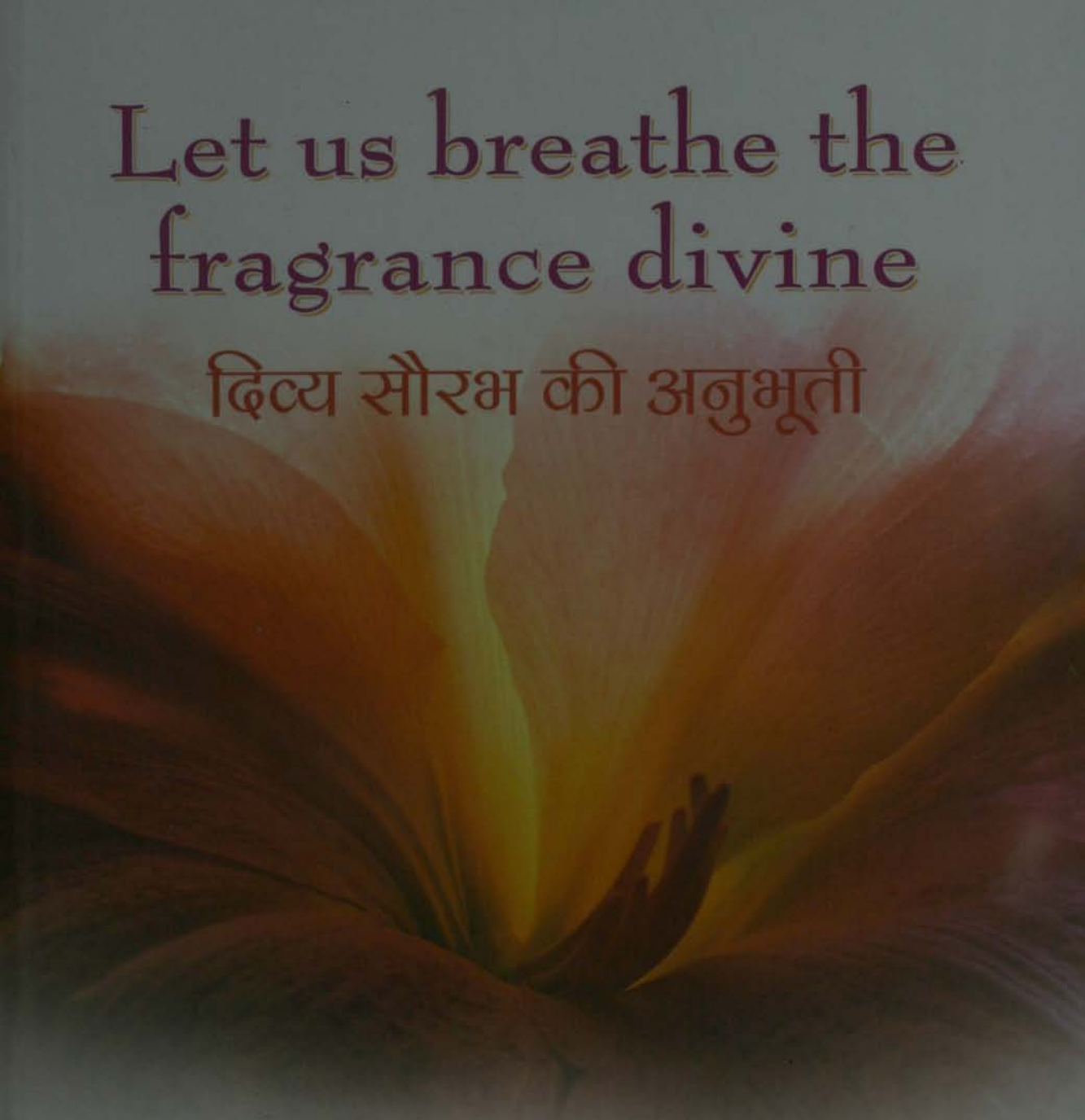

सर्वजीवहितावह ग्रंथमाला - ६८

संस्थापक: अ.मु.प.पू. श्री नारायणभाई गी. ठक्कर

श्री स्वामिनारायण डिवाइन मिशन

अमदाबाद - १३

श्री स्वामिनारायण डिवाइन मिशन का प्रतीक

प्रतीक में श्री स्वामिनारायण भगवान के चरण कमल में सामुद्रिक शास्त्र में वर्णन किये गये भगवत्स्वरूप के सोलह विलक्षण चिन्ह हैः

*दाहिने चरण कमल में नौ चिन्हः

स्वस्तिक मांगल्यमय भगवत्स्वरूप को सूचित करता है।

अष्टकोण उत्तर-दक्षिण-पूरब-पश्चिम-अग्नि-ईशान-नैऋत्य-वायव्य आठों दिशा में भगवत्-करूणा बह रही है, इसका प्रतीक है।

ऊर्ध्वरेखा भगवत्कृपा से जीवों का अविरत ऊध्वीकरण दर्शित करता है।

अंकुश सर्व को अंकुश में रखने, सर्व के कारण रूप ऐश्वर्य का प्रतीक है तथा अंतःशत्रु को बस में रखना सूचित करता है।

ध्वज ध्वज अथवा केतु सत्यस्वरूप भगवान की विजय पताका है ।

वज्र भगवत्स्वरूप का वज्र तुल्य शक्तिशाली बल जीवों के दोषों को नष्ट कर काल-कर्म-माया के भय से मुक्त करता है, यह निर्देश देता है।

पद्म जलकमलवत् निर्लेप करने वाले भगवत्स्वरूप की करूणामय मृदुता को सूचित करता है।

जांबुफल भगवत्स्वरूप में जो सम्मिलित है उनको प्राप्त दिव्य सुखरूप रस का प्रतीक है।

जव अग्नि में जव, तल आदि अनाज़ की आहुति देकर अहिंसामय यज्ञ करने वाले एवं भगवत्स्वरूप में सम्मिलित है उनके धन-धान्य एवं योगक्षेम का भगवान स्वयं वहन करते है, यह सूचित करता है।

***बाये चरण कमल में सात चिन्हः**

मीन विपरित प्रवाह में बहकर उद्‌भव स्थान तक पहुँचती मीन की सदृश ऐश्वर्य-सुख के उद्‌भव स्थान भगवत्स्वरूप की प्राप्ति सूचित करता है।

त्रिकोण जीव को मनोव्यथा, व्याधि, आपत्ति से मुक्त करवा कर ईश्वर, माया, ब्रह्म की त्रिपुटी से पर परब्रह्म-स्वरूप में स्थित करने का निर्देशक है।

धनुष अधर्म से निज आश्रित का रक्षण करने का प्रतीक है।

गोपद भगवत्प्रिय गोवंश और भगवत्प्रिय सत्पुरूषों के परोपकारी लक्षण को सूचित करता है।

व्योम भगवत्स्वरूप के आकाशवत् निर्लेप भाव की सर्वत्र व्यापकता सूचित करता है।

अर्धचन्द्र भगवत्स्वरूप के घ्यान के द्वारा चँद्रकला की सदृश वृद्धि होकर पूर्णता को प्राप्त करता है, यह दर्शित करता है।

कलश भगवत्स्वरूप की सर्वोपरिता एवं परिपूर्णता का प्रतीक है।

प्रतीक में स्थित भगवत्स्वरूप के चिन्ह के रहस्य को दृष्टि समक्ष रखकर, सर्व जीव का हित हो ऐसी निःस्वार्थ ज्ञान-ध्यान-सेवा प्रवृत्ति सदैव करते-करवाते रहने के मिशन के पुरूषार्थ में भगवत्कृपा बरसती रहे, ऐसी श्री हरि के चरण कमल में प्रार्थना।

।। श्री स्वामिनारायणो विजयतेतराम् ।।

Let us breathe the Fragrance Divine

(दिव्य सौरभ की अनुभूति करें)

सर्वजीवंहितावह ग्रंथमाला

६८

: संस्थापक :

• अ. मु. प. पू. श्री नारायणभाई गी. ठक्कर •

श्री स्वामिनारायण डिवाइन मिशन
अहमदाबाद-१३

श्री स्वामिनारायण डिवाइन मिशन
सर्वजीवहितावह ग्रंथमाला
❁ प्रकाशन समिति ❁

: प्रेरक - मार्गदर्शक :

❁ अ. मु. प. पू. श्री नारायणभाई गी. ठक्कर ❁

©श्री स्वामिनारायण डिवाइन मिशन, अहमदाबाद
(रजि. नं. ई/४५४६/अहमदाबाद : १९८१)
इन्कमटेक्स एक्षेम्पशन u/s 80(G)5

प्रथम संस्करण
प्रतियाँ : १०००
२००७, १६, फरवरी
सं. २०६३, महा वद चौदश

सेवा मूल्य : रु.१०/-

प्रकाशक
श्री स्वामिनारायण डिवाइन मिशन
८, सर्वमंगल सोसायटी, पूज्यश्री नारायणभाई मार्ग
नारणपूरा, अहमदाबाद - ३८००१३ ✆ : २७६८२१२०

मुद्रक
भगवती ओफसेट
बारडोलपूरा, अहमदाबाद

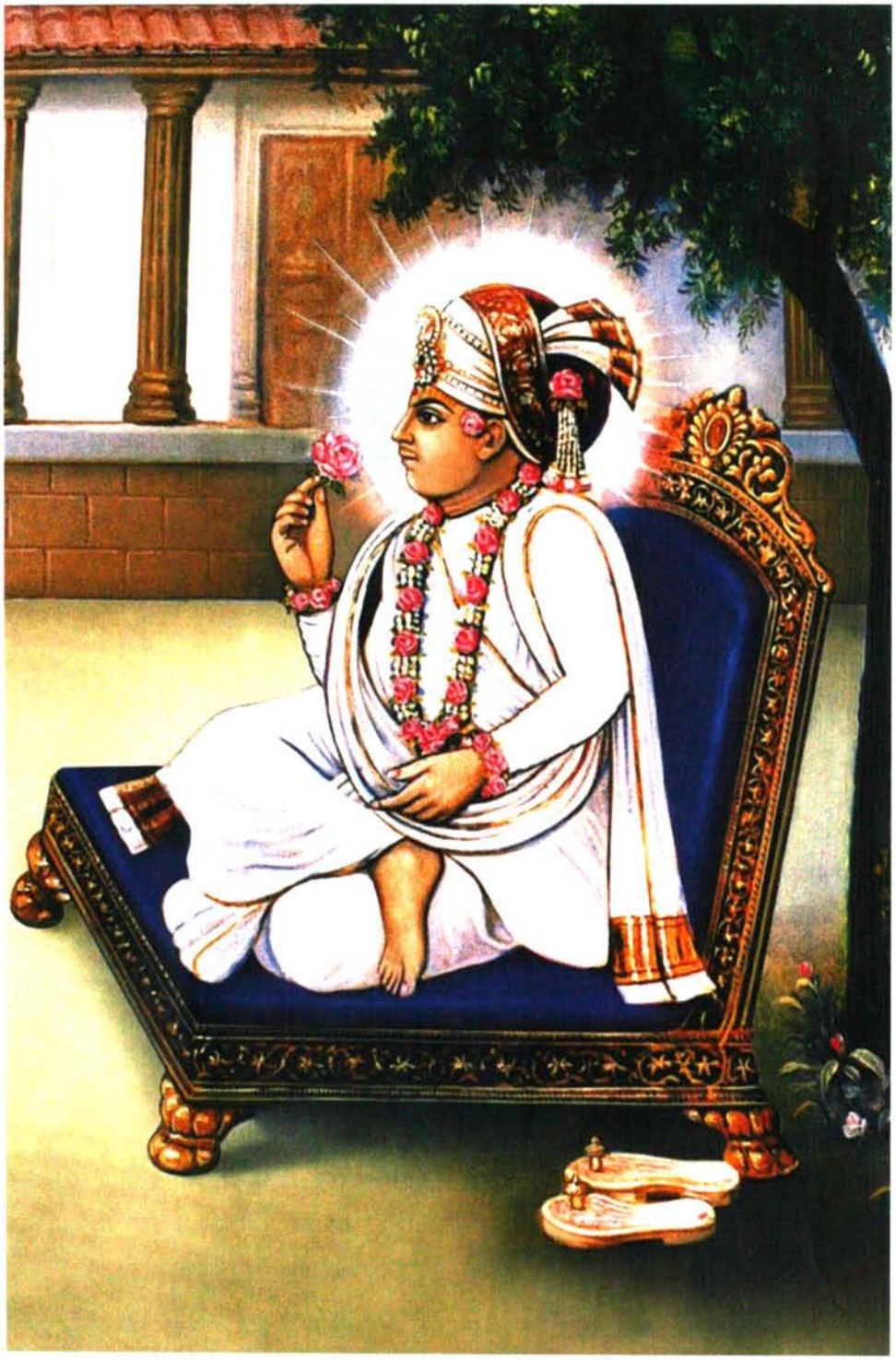

सर्वोपरि उपास्य मूर्ति

पूर्ण पुरुषोत्तम श्री स्वामिनारायण भगवान

अर्पण

अनंतकोटि मुक्त के
स्वामी एवं सदा साकार
दिव्य मूर्ति ऐसे परम कृपालु
श्री स्वामिनारायण भगवान के
गूढ़ रहस्य ज्ञान को समझाने वाले,
महाप्रभु के सुखनिधि स्वरूप की सर्वोपरिता
सर्वत्र प्रवर्तित करने वाले तथा अनादिमुक्त की
सर्वोत्तम स्थिति का अनुभव करवाने वाले
-इस प्रकार समग्र सत्संग और मानव कुल
पर महद् उपकार करने वाले परम कृपालु
अनादि महामुक्तराज़
प. पू. श्री अबजीबापाश्री के
चरणकमलों में सादर समर्पित

●

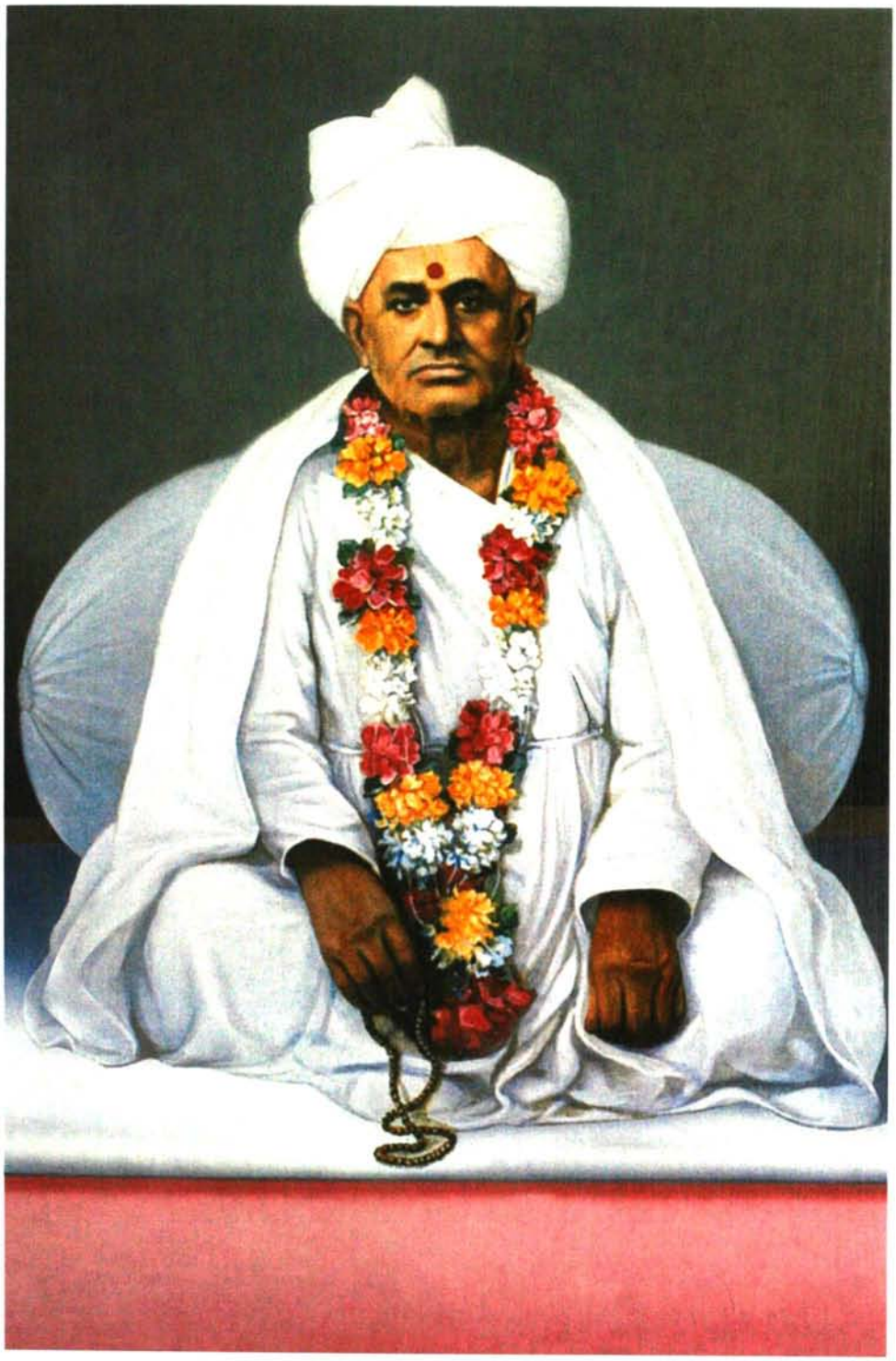

रहस्यज्ञान प्रदाता

अनादि महामुक्तराज श्री अबजीबापा

अर्घ्य

श्रीजीमहाराज़ तथा बापाश्री के
सर्वोपरि तत्त्वज्ञान को वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत
कर आध्यात्मिक, सामाजिक तथा शिक्षा क्षेत्र में
अद्वितीय योगदान देने वाले, धर्मशुद्धि, संचालनशुद्धि एवं
चारित्र्यशुद्धि के प्रखर हिमायती तथा चैतन्य का ऊर्ध्वीकरण
करने रूपी ब्रह्मयज्ञ की आहलेक जगाने सर्वजीवहितावह
संस्था **श्री स्वामिनारायण डिवाइन मिशन** की
स्थापना करने वाले करुणा मूर्ति सद्गुरुवर्य
अनादि मुक्तराज़ पूज्य श्री नारायणभाई के
चरण कमल में शतकोटि वंदन

●

संस्थापक

अनादि मुक्तराज

पूज्यश्री नारायणभाई गीगाभाई ठक्कर

संपादकीय विशेष

श्री स्वामिनारायण डिवाइन मिशन ऐसी ग्रंथ श्रेणी प्रकाशित-संपादित करने को उत्सुक है, जो समग्र मानव जाति के लिये कल्याणकारी हो एवं जिसके पठन से भारतीय संस्कृति का उच्चत्तम उद्देश्य सार्थक होता हो।

वर्तमान बुद्धियुग में उच्च शिक्षा का विस्तार प्रतिदिन बढ़ रहा है। उच्च शिक्षा का मूल उद्देश्य जीवन में उच्चतर मूल्य प्रस्थापित करना है, जीवन का सर्वोच्च मूल्य परमात्मा के परम सुख की अनुभूति में स्थित है। इन उद्देश्यों की ओर पथदर्शित करने में यह ग्रंथ श्रेणी सहायक होगी ऐसी अपेक्षा है।

शिक्षा, विज्ञान एवं यंत्रविद्या के अविरत बढ़ते हुए व्याप को हमें इस प्रकार ढ़ालना है कि केवल भौतिक सुख की प्राप्ति का साधन न बनकर, मानव के आंतरिक विकास में उच्चत्तम सहायक हो; साथ ही हमें ऐसी समझ का प्रसार करना है कि उत्क्रांति का अंतिम लक्ष्य उत्तरोत्तर विकसित होकर परमात्मा के दिव्य सुख में सम्मिलित होने में है।

दिव्यानंद की प्राप्ति के लिये अविरत विकसित होने की प्राकृतिक अंतःप्रेरणा मानव को ईश्वर द्वारा दिया गया अनमोल उपहार है। यह ऐसा सूचित करता है कि हम सब साथ मिलकर ऐसी सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक परिस्थिति का निर्माण करें, जिससे जीवन के ऊर्ध्वीकरण की प्रक्रिया निर्बाध रूप से पूर्णतः पल्लवित हो। इस कार्य को गति प्राप्त हो ऐसे प्रेरणादायी साहित्य का सर्जन करना आवश्यक है।

मानव जाति के आध्यात्मिक एवं सामाजिक श्रेय के हेतु श्री स्वामिनारायण भगवान ने, जीवन को अविरत ऊर्ध्व

बनाकर, आत्यंतिक दिव्य सुख की प्राप्ति हो ऐसा समन्वयकारी ज्ञानमार्ग प्रस्थपित किया है; उनकी श्रीमुखवाणी वचनामृत तथा शिक्षापत्री में इस तत्त्व ज्ञान की गहनता अनन्य है एवं सविस्तार सरल भाषा में प्रस्तुत है। इसके अतिरिक्त स्वयं के ब्रह्मनिष्ठ संत एवं गृहस्थ मुक्तपुरूष द्वारा सर्वहितावह साहित्य भी विपुल मात्रा में सज्जित करवाया है।

उपर्युक्त ग्रंथो में सर्वग्राह्य भारतीय संस्कृति तथा जीवन जीने की वास्तविक दिशा दर्शित की गई है। अतः इस ग्रंथ श्रेणी में सर्वजन पूरब के हो या पश्चिम के, सभी को दिव्यता की ओर अग्रसर होने में पथदर्शक हो, ऐसे आदर्श तथा ज्ञान को अर्वाचीन ज्ञान के प्रकाश में प्रस्तुत करने का उत्तम प्रयत्न किया जायेगा। हमें विश्वास है कि इससे मानव जीवन में संवादिता आयेगी एवं आधुनिक जीवन की विषमता क्रमशः कम होते हुए दूर हो जायेगी।

भारत या विश्व के अन्य साहित्य जिसमें दर्शित विचार हमारे उद्देश्य के साथ सुसंगत होंगे, उन्हे भी इस ग्रंथ श्रेणी में सम्मिलित किया जायेगा।

हमारी ईच्छा यह है कि इस ग्रंथ श्रेणी के पुस्तक केवल गुजराती भाषा में ही नहीं, अपितु हिंदी, अंग्रेजी आदि भाषा में भी प्रकाशित करें, जिससे अन्य भाषी पाठक भी इस ग्रंथ श्रेणी से लाभांवित हो।

मिशन की इस प्रवृत्ति की सफलता प्राप्ति में सभी का सहकार प्राप्त हो एवं मिशन के सर्व कार्य में सदैव प्रभु कृपा संलग्न हो, यही अभ्यर्थना।

दासानुदास

नारायणभाई गी. ठक्कर

स्थापक प्रमुख

श्री स्वामिनारायण डिवाइन मिशन

सं. २०४२, श्रीहरि जयंती

अप्रैल १८, १९८६

अहमदाबाद

निवेदन

इस लघु पुस्तिका में १५० दिव्य मोतिओं को अ. मु. प. पू. श्री नारायणभाई गी. ठक्कर ने भगवान श्री स्वामिनारायण के अनन्य महान संत अनादि महामुक्तराज श्री अबजीबापाश्री के दिव्य व्याख्यान एवं उपदेश में से संयोजा है।

श्री अबजीबापाश्री के मुख कमल से निःसृत दिव्य अनुकंपन युक्त शब्द, मुमुक्षु जीव जो ईश्वर के साक्षात्कार की आकांक्षा रखते हैं, उनके लिए आध्यात्मिक ऊर्ध्वीकरण का स्त्रोत है।

यह सुभाषित मूलतः गुजराती में है। उनका हिंदी भाषिओं के लिए हिंदी में अनुवाद किया है।

शान्ति, खुशी एवं मुक्ति के मार्ग पर अग्रसर होने वालों के हाथो में इन पवित्र मोतिओं को प्रदान करते हुए प्रसन्नता की अनुभूति करते हैं।

विशेष प्रसन्नता यह है कि इस लघु पुस्तिका का प्रकाशन श्री स्वामिनारायण डिवाइन मिशन के रजत जंयती समारोह के अवसर पर हो रहा है।

सं. २०६३, महा वद चौदश
ई. स. २००७, १६ फरवरी

प्रकाशन समिति
श्री स्वामिनारायण डिवाइन मिशन

Let us breathe
the
Fragrance Divine

(दिव्य सौरभ की अनुभूति करें)

मूर्ति में संलग्न होने की रीति सीखने के पश्चात् जो प्राप्ति होती है वह अनुपमेय है, जप, तपस्या के द्धारा ऐसी प्राप्ति नहीं होती।

Prayer and penance, meditation and chanting of mantra offered without a burning desire to be one with Murti may bear fruit of the action, but it can never bring peace or bliss that one experiences at the height of oneness with God in personal form.

मूर्ति की धारणा के समय विभिन्न अंग दृष्टिगोचर हों, किंतु समग्र मूर्ति दृष्टिगोचर न हो यह ध्यान की कला नहीं है अगर देह से आत्मा को भिन्न कर सके तब ही साक्षात्कार होता है।

So long as you see the different parts of the Murti in your meditation, and miss the whole -the revealation of the indivisible Supreme Lord Shri Swaminarayan, your meditation is lacking in devotion. He who knows how to uncover the Atman and free himself from the bonds of body stands firm in his realisation of Murti.

देह की अंतिम क्षण में यह प्रसन्नता रहे कि मैं अपने वास्तविक घर में महाराज से मिलने जाता हूँ, यही परिपकव निश्चय है।

At the last hour of leaving this body, if one feels elated thinking that one is returning 'Home' to meet Maharaj, know him to be steadfast in his realisation of God.

महाराज की दिव्य मूर्ति का सुख भोगना ही अक्षरधाम में सेवा है।

To experience the divine joy of being in communion with the luminous Murti of Maharaj is akin to serving Him in Akshardham.

जिस प्रकार दत्तात्रेय ने सर्प, चील आदि में से गुण ग्रहण किये वैसे ही हमें भी संत-हरिभक्त में से गुण ग्रहण करने चाहिए।

The way Dattatreya became enlightened by observing the cobra, the kite etc., we too should grow wiser by cultivating kinship with the saints and devotees.

त्यागी को जडमाया जो द्रव्य एवं चैतन्य माया जो स्त्री ऊसका संयोग हो तो ऊसे काला सर्प लिपटा जानें।

When an ascetic comes in contact with inanimate 'Maya' called wealth or animate 'Maya' called woman, he should realise that he is in the stranglehold of a deadly cobra.

भले बुरे विषय के योग से जिसका मन शितोष्ण
न हो ऊसे परम भागवत संत जानें।

One who is not elated by prosperity nor dejected by adversity is the true Param Bhagvat saint.

बाधा ऊत्पन्न करनेवाले समस्त दोषों के निवारण का श्रेष्ठ ऊपाय श्रीजीमहाराज तथा महान संत का स्मरण एवं निरंतर प्रार्थना है।

If someting agitates your mind or makes your life miserable, remember Shreeji Maharaj and His Brahmanised saints in your prayers and all your sorrows shall subside and all your agonies will end.

मूर्ति को भूलकर मात्र कार्य का स्मरण करे
वह चावल छोडकर छिल्के को रखने जैसा है।

To remain engrossed in our mundane work
and ignore the Murti of our Lord is akin
to preserving the husk and discarding
the grains.

मूर्ति सिद्ध करने के पश्चात् भी परम एकातिंक तथा अनादिमुक्त का मार्गदर्शन अत्यावश्यक है क्योंकि वे ही श्रीजीमहाराज के सुख के प्रदाता हैं।

Those who have realised Murti –God, they also need guidance from the Param Ekantik and Anadimuktas, the liberated ones. For they are the guides and they alone can help them attain the bliss of God (Maharaj).

जितना आज्ञा पालन एवं लोप करे उतने ही सुख-दुःख की प्राप्ति होती है। महाराज की आज्ञा का लोप तो अपमृत्यु तुल्य है।

One who violates or transgresses the commandments of Maharaj is said to have died an unnatural death, a death beyond redemption. To a devotee of God, happiness lies in the observance of the injunctions of God, and pain in the breach of the same.

आज मुक्तो के द्धारा श्रीजीमहाराज सत्संग में सुख प्रदान करते हैं, अतः जीव को कल्याण के हेतु महान मुक्त के दास होकर रहना चाहिए।

In present times, Shreeji Maharaj is bestowing His divine grace on the Satsang-fellowship through His Muktas. Therefore, those who are seeking the ultimate salvation should dedicate their lives to the service of the great Muktas.

मूर्ति के सुख के इच्छुक को सांसारिक श्रांति एवं संघर्ष का त्याग कर महाराज का ध्यान करना आवश्यक है।

Those who aspire the bliss of God should free themselves from all the strife and struggles of life and meditate devoutly upon the luminous Murti of Maharaj.

हर सरोवर में पकंज एवं हर कानन में अगर अलभ्य है वैसे ही हर गृह में महान मुक्त भी अलभ्य हैं ऊनके योग में मूर्ति सिद्ध कर लेनी चाहिए।

The way a lotus does not grow in every pond or lake, and the agar -tree is rare in the woods, every home cannot boast of being the dwelling place of great Muktas like us. Therefore, the seekers must seek our guidance to realise God.

ज्यों पारसमणि से लोहा स्वर्ण बनता है त्यों अनादि मुक्त के द्वारा ही अनादि मुक्त की स्थिति प्राप्त होती है।

The way philosophers' stone transmutes metal into gold, the state of Anadimukta can be attained through communion with the Anadimuktas alone.

पेड़-पर्वत, वृक्ष-लता आदि जो महाराज तथा महान मुक्त की दृष्टि में आए उनके भी धन्य भाग्य हैं।

Blessed are those trees, mountains, hills, shrubs, vines and creepers etc. who have had the great fortune of being touched or seen by Maharaj and His Brahmanised liberated Muktas.

जो निज दोष से परिचित हो, पश्चाताप करे एवं क्षमा याचना करे वह धन्य है, महान संत के संग मन संलग्न करे तो भूल से परिचित हो, पात्र हो एवं जीव में बल प्रदिप्त होता है।

Blessed are those who see their sins, identify the evil; expiate and pray for mercy. He that seeks the company of the great and counsel of the God-realised souls can see his faults, correct his errors and innerly emerge stronger in the battle of life.

दिखावे मात्र का सत्संग न करें महाराज तथा महान मुक्त के वचनानुसार नियम, धर्म पालन अत्यावश्यक है।

Do not pretend to be a devotee or a satsangi; adhere to the commandments of Maharaj and act accordingly. Listen to the words of the spiritually accomplished soul and never transgress the laws of the Lord. Discipline must be maintained at any cost.

सत्संग में कहा जाने वाला बड़प्पन वास्तविक बड़प्पन नहीं है, वास्तविक बड़प्पन तो मूर्ति में संलग्न होना है वरना कमी रह जाती है।

Even within the satsang those who claim to be spiritually great and exhibit scholarship and command others, may not be worthy of our reverence if their mind is not fixed on the Murti of Maharaj -with all their apparent spirituality they are the poorest.

सुखी कोन? जो महाराज की मूर्ति रखे, वास्तविक साधुता रखे एवं सत्संग में दास्यभाव से वर्तन करे।

Who is the happiest man? One who is totally absorbed in the personal form of Maharaj and seeks Him through right conduct and humility in satsang, is the happiest man.

स्नेहमयी एकमात्र भगवान एवं भगवान के अनादिमुक्त ही हैं। अन्य पदार्थ में स्नेह करना जीव में रोग तुल्य है।

Our object of love and devotion can be either our God or the Anadimukta who forever dwells in the luminous Murti of Maharaj. When a man wanders away from them he comes to grief. Deviation is the sure sigh of a diseased soul.

मुक्त सदैव प्रत्यक्ष हैं, आवागमन नहीं करते,
किंतु मनुष्य देह के द्धारा प्रत्यक्ष बोलते हैं,
भोजन ग्रहण करते हैं, सेवा अंगीकार करते हैं
एवं वार्ता के द्धारा सुख प्रदान करते हैं।

Muktas dwell eternally in our midst; they do not come or go; they are not transient. But when they manifest themselves in human form, they talk to us, partake our food, accept our service and bestow happiness upon us with their words of wisdom.

ऐश्वर्य, चमत्कार, प्रताप वा समाधि अखंड न होते हुए, अर्थहीन हैं; वस्तुतः सुख तो महाराज की मूर्ति में है।

Affluence, miracles, mystification will not mean anything; they do not last long; they are ephimeral. Seek happiness in the divine Murti of Maharaj, for He alone can lead us unto real happiness.

ज्यों सरिता अपने में उडेले हुए जल को स्वयमेव सागर तक पहुंचाती है त्यों मुक्त से आत्मीयता स्वयमेव श्रीजीमहाराज के सुख की प्राप्ति करवाती है।

The way water we pour into a river flows into the ocean and merges with the sea, the service offered to a Mukta ultimately reaches our Lord and by identifying ourselves with the Mukta we merge in the Murti of Shreeji Maharaj, retaining Master -Servant relationship intact.

गृहस्थ सत्संगी अपना वास्तविक परिवार सत्संग को ही जानें।

To a householder devotee, satsang is the real home.

महान मुक्त के दर्शन-प्रदान समय में समागम कर लें। निज देह का निर्धार नहीं है।

As life grows shorter with the passage of time, seek communion with the righteous and the great so long as they dwell in our midst.

श्रीजीमहाराज के अनादि मुक्त जीव की गलती एवं गुनाह को नज़र अंदाज़ करते हुए दुष्कर समय में उसकी सहायता करते हैं।

Anadimuktas devoted to the service of Shreeji Maharaj condone all our crimes and ignore our faults and come to our rescue in difficult times.

अनादि मुक्त द्वारा किये गए स्नान का जल पंचामृत तुल्य पावन है उसे महिमा सहित शिर्ष पर चढाने से पंच महापाप का नाश होता है।

If you collect the water used by Anadimukta for his bath and with his glory at your heart, sprinkle it on your head, of all the 'five deadly sins' you will be absolved.

आयु एवं विद्या से वास्तविक महानता नहीं है, वास्तविक महानता तो मूर्ति में संलग्न होने से है।

Eminence is attained through knowledge and eminence may increase with age but real eminence is reached through absolute spiritual absorbtion in the Murti of Maharaj.

निरंतर महाराज की मूर्ति के चिंतवन से अत्यधिक बलवान कामादि शत्रु भी वश में होते हैं।

If the mind is constant in contemplation of the Murti of Maharaj, however formidable and destructive the passions (inner -enemies like lust etc.) may be, they will be overpowered and crushed.

जिस प्रकार कंकड़ घड़े को फोड़ता है उस प्रकार मुक्त के संग समागम में अवगुण रुप कंकड़ से जीव का बुरा होता है।

The way a pebble smashes the pot, to see flaw in the great while we are in their company contaminates our life.

महाराज के मुक्त अमृतवृक्ष सदृश हैं। ज्यों अमृत के वृक्ष का छोटे से छोटा हिस्सा भी अमृत ही है, त्यों मुक्त की सेवा-स्पर्श मात्र भी अमृत तुल्य ही है।

The Muktas of Maharaj are like the Nectar-Trees; pick any part of this tree it will rejuvenate your life. To serve or come in contact with such Muktas is to taste the nectar.

स्वच्छ अंतःकरण में ही श्रीजीमहाराज साक्षात्त् बिराजमान होते हैं, जिस प्रकार दर्पण की पृथ्वी में सूर्य दृष्टिगोचर होता है।

If the mirror is clean, we can see the reflection of the sun, if the conscience is clean and free from all delusions, Shreeji Maharaj deems it fit to dwell in it.

भगवान पुरुषोत्तम ने हमारा हाथ थामा है उसे छुड़ा न लें अर्थात् छोटी-बड़ी आज्ञा का लोप न करें।

Lord Purushottama is leading us by hand, let us not reject His help and go astray by ignoring or transgressing His injunctions and advice.

जैसा स्नेह मीन को जल से है वैसा स्नेह जीव अनादि मुक्त में करे तो सरलतापूर्वक माया को पार कर पुरुषोत्तम भगवान के सुख में क्रीड़ा करता है।

The way water is life to fish, an Anadimukta should be to man; we can swim through the sea of Maya-delusions and reach the shores of salvation -Lord Purushottama by surrendering ourselves to His Anadimukta. To identify ourselves with Anadimukta is to be one with God.

स्वभाव को जीते बिना महाप्रभुजी के सुख की इच्छा करना व्यर्थ है।

Without subduing our passions, the desire for the divine grace of Mahaprabhuji is waiting in vain.

‘छोटी सेवा प्राप्ति महान भाग्य प्राप्ति है।’ दिक संत की सेवा, मंदिर झाड़ना, शौचालय साफ करना, कथित छोटी सेवा है।

Meaner the job, greater is the reward. To nurse a sick sadhu (ascetic), to sweep and clean a temple and to wash toilets etc. are considered to be lowly jobs.

श्रीजीमहाराज का सुख अमृत के सागर के सदृश है, उसमें से एक बिंदु मात्र की प्राप्ति हो तो जीव अमर हो जाता है, किंतु इसके लिए प्रयत्न अत्यंत आवश्यक है।

If we can have a drop of nectar from the ocean of Shreeji Maharaj's grace, we will become immortal. But we will have to strive hard to be worthy of that one redeeming drop.

अर्जून ने पक्षी की आँख की ओर एक लक्ष किया उसी प्रकार हम भी मूर्ति के सिवा कुछ है ही नहीं ऐसा समझकर मूर्ति की ओर एक लक्ष करें।

The way Arjuna the archer concentrated upon the eye of the bird, we too should forget everything else and concentrate upon the Murti of Maharaj.

जिस प्रकार दुश्मनों को जीतकर राजा बना जाता है उसी प्रकार काम, क्रोध, लोभ, मान आजि दोषों को जीत सके वह राजा है अन्यथा रंक है।

Pauper is the man who allows himself to be led and allured by enemies such as lust, anger, avarice, fame etc. Monarch is he, who overcomes all these evils and conquers them.

मूर्ति में रहे उसे मेरा नहीं, तेरा नहीं, साधु नहीं, गृहस्थ नहीं कुछ नहीं रहता, एक मूर्ति ही रहती है।

One who is in communion with God rises above the dichotomy of 'mine' and 'thine'; an ascetic and a householder. To the serene one absorbed in Murti, such distinctions have no meaning. He has one aim, one desire and one goal – the divine Murti of Maharaj.

जीव के विपरित स्वभाव उसके मान-सत्कार की संतुष्टि के हेतु महान व्यकित के समागम का त्याग करवाकर अधर्म में बंधवा देते हैं।

Man's mind is such that if he is honoured in hell he will quit heaven; if bad people pamper him, he will part company with the good (great) and his little ego will enslave him.

गेरुए कपड़े पहनने से क्या हो? जीवात्मा गेरुआ हो तथा महाप्रभुजी में संलग्न हो वही सत्य है।

What's the use of wearing the saffron coloured clothes of and ascetic? The soul must renounce and absorb itself in Mahaprabhuji. To unite with god is to renounce.

जिस प्रकार सागर में धूल-कंकड जैसी वस्तुएँ दृष्टिगोचर नहीं होती उसी प्रकार मूर्ति में वृत्ति स्थिर करे तो पिंडं ब्रह्मांड कुछ भी प्रतीत नही होता।

The way an ocean submerges dust, pebbles and other objects and yet remains serene and unaffected, those whose mind is absorbed or totally submerged in the Murti of Maharaj are cut free from the bonds of body and Brahmand. he remains untouched by actions and desires.

इस लोक में बेटे की मृत्यु अर्थात् वियोग से अति शोक होता है तो अखंड सुख प्रदाता महाराज की मूर्ति के वियोग से तो अति शोक होना चाहिए।

If the loss of our child remains inconsolable, separation from the Murti of Maharaj should always be a more agonizing experience.

काम व्यक्ति को यम-राक्षस में परिवर्तित करता है तथा क्रोध सर्प में परिवर्तित करता है।

Lust breeds the agent of death –Yama and anger transforms us into the poisonous cobra.

मायिक वस्तु के हेतु जीव दुनिया के किसी भी छोर पर पहूँच जाता है मगर महाराज सदृश दिव्य वस्तु प्राप्त करने के प्रयत्न नहीं करता।

We strive tirelessly to possess the objects of sense gratification; but we seldom try to be worthy of receiving the divine redeeming grace of Maharaj.

देह रखने का जितना जतन है उतना अगर
मूर्ति का जतन करे तो मूर्ति साक्षात् हो जाए।

If the Murti of Maharaj is taken care of
the way you take care of your body, you
will soon become a God-realised man.

हड्डी चबाने से निकलते हुए रक्त से श्वान झुठा आस्वासन पाकर प्रसन्न होता है, उसी प्रकार काम, क्रोध, मान रुप झुठी हड्डियाँ न चबाएँ।

The dog while chewing a piece of bone gets false satisfaction from licking the blood oozing from his own teeth. Therefore, man should avoid chewing the bones of lustful desire, anger and false pride.

संत के द्रोह का पाप भगवान के द्रोह के सदृश है तथा संत की सेवा का फल भगवान की सेवा करने सदृश है।

To offend and hurt a saint is to offend and hurt God; and to serve a saint is to serve God.

मृतिका के पात्र में जल डाला हो, किंतु छिद्र होते ही जल निकल जाता है, उसी प्रकार पात्र हुए बिना श्रीजीमहाराज का सुख स्थित नहीं रह सकता।

The way a cracked pot cannot contain water, the grace of Shreeji Maharaj cannot be retained by those who lack integrity and are not spiritually accomplished.

आज्ञा में बरते तथा बरताये तथा दुराग्रह सर्व त्यागे तथा त्याग करवायें ऐसे का संग सदैव रखें।

Always seek the company of those who obey and inspire others to obey the commands of God; always be in the company of those who have overcome their own desires and help us to put aside our own.

जहाँ महान मुक्त निवास करते हों वह नैमिषारण्य क्षेत्र कहा जाता है। वहाँ ध्यान-धारणा जो भी करे वह थोडा करे तथापि वास्तविक शांति हो जाती है।

Naimisharanya or the sacred woods are, where the great Muktas dwell. If you meditate even for a while at such hallowed place, you will experience genuine peace.

निज के पैर में चुभे कंटक को निकालना हो वह स्वयं के हाथ में है, उसी प्रकार श्रीजीमहाराज की आज्ञा के विरुद्ध वर्तन रुप कुसंग का त्याग करना भी स्वयं के हाथ में है।

The way we can remove a thorn from our foot, it is within our power to discard the bad company that leads us astray and prompts us to violate the commands of Shreeji Maharaj.

महान पुरुष पृथ्वी पर से देहोत्सर्ग कर निकल चलें तत्पश्चात् अत्यधिक पश्चाताप होता है। अतः हमारे मध्य हों उस समय समागम कर लेना चाहिए।

When the God-realised souls withdraw themselves from this earth, we are left with our sorrows. Therefore, let us seek their company while they are in our midst.

मोक्ष का द्धार खोले अर्थात् मोक्ष करें ऐसे संत जहां निवास करते हों उनका समागम करे वह द्धारिका की यात्रा कही जाती है तथा वह स्थल द्धारिका है।

Seek everywhere the God-realised saints who lead us and help us attain Moksha-salvation. To visit them is to go on a pilgrimage. Dwarika is where dwells a saint.

साधु द्रव्य को विष्टा तुल्य जाने। यदि विष्टा का संकल्प हो तो द्रव्य का संकल्प हो ऐसी समझदारी रखें।

When an ascetic desires for wealth, he is consumed away by filth, therefore he should look upon wealth as the filth of the world.

किसी से आज्ञा का लोप हुआ हो उसे शुद्ध सत्त्वगुण में रहकर शांति से कहना चाहिए अपितु कोपित न हों, क्रोध के द्वारा उसका तिरस्कार न करें।

If someone errs or violates the commands of God, let us not loose our patience or be severe with him. tell him not in anger discard him not with contempt. Despise him not reject him not but win him back with love and compassion which characterise Satvaguna.

आज्ञा पालन करने से महाराज एवं मुक्त बिन बुलाये आते हैं, किंतु ऐसा न जानें कि, जब थे तब थे अब नहीं हैं, सदैव साथ ही हैं ऐसा समझो।

If you fall not, out of the way of God, even if you call Him not, Maharaj and His Muktas will always be with you without seeking: Know that the redeemer is always with you because He is beyond the confines of 'is' and 'was'.

परम सुख के हेतु पूर्व संत मृतिका के गोले खाकर तथा भूख, दुःख, ठंडी, धूप, वर्षा की झड़ियाँ सहकर भी बलपूर्वक समागम करते थे ऐसी तत्परता थी।

In the past the saints and seekers of supreme joy used to endure pain, hunger, heat and cold. They would swallow the 'balls' of clay to quench their hunger and face torrential rain to seek communion with God and His brahmanised saints. Such was their spiritual quest that nothing could deter them or dampen their spirit.

जीव को पलमात्र भी फुर्सत मिले तो सोता रहे या गप्पे लगाए, किंतु भगवान का स्मरण नहीं करता ऐसा बचकाना है।

Man is such a strange creature that he fills his leisure with idle gossip or wastes his time in sleep but he will not pay attention to his own spiritual needs or remember God.

बचकाना स्वभाव न रखें, बाल्यावस्था से ही वृस्थावस्था के भाव लाए, किंतु युवावस्था के भाव आने ही न दें।

Don't be childish. We should cultivate the wisdom and maturity of the grown up people right from the childhood. We should always guard ourselves against the impulses and recklessness of the youth.

कनक के सदृश स्वच्छ रहे तो ही महाराज तथा
महान मुक्त प्रसन्न होकर संग रहते हैं।

We should always be pure as gold. Then
only Maharaj and His Muktas will always
be with us and bestow their joy upon us.

जो गृहस्थ पंच नियम का भंगकर भगवान की सेवा करे, उस सेवा में लोभित होकर उसको ग्रहण न करें जब प्रायश्चित कर ले तत्पश्चात् ही सेवा ग्रहण करें।

A householder who is deeply absorbed in his devotion and service to God but negligent in the observance of the Panch Vartman – the five codes of moral conduct, must repent. Unless he offers penance for the breach of his vow, we should resist the temptation of accepting the offerings made by him.

जीव को जीव के वैद्य (अनादि मुक्त) मिले तो उसे ऐसा बलवान कर देते हैं कि वह महाराज के सुख से सुखी हो जाता है।

If the soul is treated by the divine physician called Anadimukta, it will be cured of all the diseases of the mundane world. He will give us strength and energy to receive and enjoy the grace and happiness offered by Maharaj.

काम-क्रोधादि ऐसे शत्रु हैं जो जीव को मायारुप कचरे में घुमाते रहेते हैं तथा अगर लापरवाह रहे तो कहीं उठाकर ले जाए।

The enemies called lust, anger and other negative feelings turn us into the punk and junk of Maya –the delusions. If we do not remain alert or cautious, they will fling us into the void.

श्रीजीमहाराज के संमुख दृष्टि रहे यह धार्मिक संमेलन-उत्सव का मुख्य फल है, उसे भुलकर कार्य में ही मग्न नहीं हो जाना चाहिए।

Mere excitement or physical involvement in religious festivals and celebrations has no meaning. The real joy or reward comes from genuine rapport with Shreeji Maharaj.

महान संत के कथनानुसार हमे तो अधम जीव को भी उद्धारना है, अतएव माया को टालने के हेतु महाराज का एवं हमारा निरंतर स्मरण करें।

The great saints and sages tell us, "We want to uplift the meanest and the lowliest, therefore, if you want to free yourself from the clutches of Maya -delusions, never forget even for a moment, Maharaj and us."

महाप्रभु का भजन क्रमशः कंठ, हृदय तथा नाभि में उत्तमोत्तम है किंतु उन सभी से सत्तारुप होकर मूर्ति की धारणा करे वह सर्वोत्तम है।

It is great to sing orally in praise of God, better to do so from the throat, but still better it is to remember Him with all our heart, and richer still is to make Him dwell in our conscience. However, nothing can surpass the mode of worship in which one is totally immersed in the Murti of Maharaj.

देह का सुख भी प्राप्त हो एवं मूर्ति का सुख भी प्राप्त हो यह कदापि संभव नहीं है।

It is not possible to experience and receive the divine bliss of Murti without foregoing the cravings for physical comforts and joys.

महान मुक्त जो लौकिक भाव प्रतीत करवाते हैं वे अनंत जीव की पुष्टि के हेतु करवाते हैं उनकी स्थिति तो ऐसी अलौकिक है कि उनकी स्थिति के स्मरण मात्र से काम-क्रोधादि शत्रु बाधा उत्पन्न न कर सके।

The ways of the God-realised saints are unknowable, they are perplexing. Their normal and seemingly casual actions have far-reaching meanings. All their actions are aimed at helping us unite with the eternal Supreme Lord. If we can recall their spiritual state, lust, anger and other debilating impulses will not affect us.

जीव को विपरित राह से पलटाकर श्रीजी तथा महान मुक्त में संलग्न करे यही वास्तविक परमार्थ है।

Charity lies in bringing back the soul on the path of righteousness and restore it to the love and devotion to Maharaj and His great Muktas.

किसी को आमंत्रित कर भोजन न करवायें तो वह व्यथित हो जाए, उसी प्रकार बिना नियम की मानसी पूजा भी ऐसी है। वह श्रीजीमहाराज को प्रिय नहीं है।

If you invite a man to dine with you and he is not served at the right hour, he will feel hurt. Likewise irregularity in Mansi Pooja fails to please our Lord.

भगवान के भक्त की ऐसी रीति है कि वे सच्चे दिल से अधिकाधिक भला करते हैं यहाँ तक कि द्वेषी को जरुरत हो तो उसके कृत्य को लक्ष में न लेते हुए उसका भी अत्यधिक भला करते हैं।

Even our rival or an opponent when asks for help, we should forget his wrongs and extend all our help with truest heart. To do a good turn to one's own opponent is the mark of a real devotee of God.

यह जीव अपने स्त्री, बाल-बच्चों के लिए जितना श्रम करता है उतना ईश्वर के हेतु करे तो कितने सुख की प्राप्ति हो?

If we can toil and strive as much to please our God as we do to please our wife and children, our reward will be the richest and our joy will know no bounds.

हमें तो अखंड एकतार होकर श्रीजीमहाराज में जुड़ जाना चाहिए; श्वासोच्छ्वास उनका स्मरण करें फलतः सर्व दुःख की समाप्ति हो।

To end our sorrows and to overcome our strife we should become one with Maharaj and remember Him the way we breathe without halt.

सभी प्रकार की वासना का त्यागकर एक श्रीजीमहाराज की मूर्ति ही रखें क्योंकि शुभ वासना भी बाधा उत्पन्न करती है।

Even a good or positive impulse can obstruct our spiritual progress, therefore we should discard all impulses and seek joy in the Murti of Maharaj.

बातचीत एवं प्रश्नोत्तर करते समय सावधानीपूर्वक ध्यान रखना चाहिए कि रजस-तमस का भाव न आए, वरना सर्व शब्द व्यर्थ हो जाते हैं एवं किसी को पुष्टि नहीं होती।

While conversing or while asking questions and giving answers our language should not be coloured by either rajO-guna or tamo-guna (lust and anger); because the words so coloured by these attributes not only prove to be substanceless but they will also fail to sustain one's faith in God.

गृहस्थ को व्यवहाररुप हो जाए ऐसे आवेगपूर्वक व्यवहार नहीं करना चाहिए, अपितु उतना ही व्यवहार करना चाहिए कि श्रीजीमहाराज का सुखपूर्वक स्मरण हो।

The householder should organize and conduct the affairs of life in such a way that he finds time to remember and pray to Shreeji Maharaj. The affairs of life, however absorbing and pleasing may be, should not be allowed to consume and claim all our time; one should never become the slave of his own activity.

जो श्रीजीमहाराज की बनाई मर्यादा रुप आज्ञा का पालन न करे वह साधु भी न कहा जाए तथा सत्संगी भी न कहां जाए।

A man who transgresses the self-restraining moral injunctions prescribed by Shreeji Maharaj is neither a true ascetic nor a devout Satsangi.

भक्ति करते हुए ईर्ष्या हो तो भक्ति निष्फल जाए।

Devotion dies as soon as it is enveloped by envy; faith fails when desire overtakes.

जिसे श्रीजीमहाराज के सुख की शीघ्र प्राप्ति करनी हो वह काम, क्रोध, ऐश्वर्य, प्रसिद्धि, यश, कीर्ति को हिस्सेदार न होने दे।

Those who are eager to receive the grace of Maharaj at the earliest should part company with the evils called lust, anger, wealth, fame, power and other ego inflating passions.

अधिकार का वाणी का, विद्या का, द्रव्य का ऐसे अनंत प्रकार के जो बड़प्पन हैं वे सभी दुःखदायी एवं बंधनकारी हैं।

The pride of dignity, the pride of eloquence, the pride of education and scholarship and the pride of possessing wealth etc. enslave the man and cause pain and sorrow.

दासत्व, निर्मानीभाव, निर्गुणभाव इन सभी का मान टालकर एक मूर्ति में ही वृत्ति रखें।

Overcome the sense of feeling superior - thinking that you are the greatest devotee, that you have conquered pride and ego and that you have renounced all the actions of senses. You must exercise self-control even while exhibiting your virtues. Master your moods and grow attached to the Murti of Maharaj.

महान संत के साथ जीव जुड़ा हो उसका देह विलय अपमृत्यु से हो तथापि उसका आत्यंतिक कल्याण होता है।

If your soul is united with God-realised Muktas and even if you die an unnatural death, rest assured you will attain salvation.

मान पापरुप है एवं सन्मान सर्प तुल्य है।

If arrogance is a sin, yearning for admiration or felicitaion is deadly as a viper.

जो जीव महाराज के सुख का त्यागकर स्वाद मानादि पंचविषय में प्रीति करता है वह बालक सदृश है, जो तुच्छ पदार्थ के हेतु रुदन करता है, उससे मूर्ति के सुख की प्राप्ति नहीं होती।

The way a child cries to get trifles, the ignorant man prefers sense-objects to the divine grace of Maharaj and therefore he never experiences the bliss that comes from communion with Murti.

जो संत होते हैं वे पूर्व-संकल्प का शमन उसके उत्पन्न होते ही कर देते हैं एवं जो उत्पन्न ही नहीं होने देते वे भगवंत अर्थात् भगवान सदृश कहे जाते हैं।

One who can subdue thoughts and passions is called a saint,but God -like are only those in whose hearts desires or passions never rise.

लाखों जन्म की तपस्या उपरांत कल्याण प्राप्ति नहीं होती वह आज पंचनियम पालन से प्राप्त है। ज्यों जम्हाइ लेते शर्करा प्राप्ति।

Salvation which remains unattainable even after offering penance during the unbroken cycle of innumerable births and deaths can easily be attained through observance of the Panch Vartman – the five commandments of Maharaj. It is like getting a lump of sugar while yawning.

कोंपल जल की प्राप्ति से नवपल्लवित होकर वृद्धि प्राप्त करती है उसी प्रकार महान मुक्त के संग से जीव पल्लवित होता है।

The way water helps tender shoots to become leaves, the soul acquires spiritual prowess through contact with God-realised Muktas.

महाराज तथा महान मुक्त अदृश्य होते हुए भी उनका स्मरण सच्चे भाव से करने से प्रत्यक्ष सदृश ही फल देते हैं।

Even when Maharaj and His Muktas are not visible, if you remember them with a devout heart, you will feel their presence and experience their bliss.

स्त्री-पुरुष के परस्पर सहवास होने के पश्चात् भी उनका धर्म रहे ऐसी आशा रखना व्यर्थ है।

One can never hope to remain steadfast on the path of righteousness so long one maintains contact with women.

देह के द्वारा गंगा स्नान हो या न हो, किंतु मूर्ति रुप गंगा में स्नान अवश्य ही करें।

If it is not possible for you to have a dip in the Ganges you must at least bathe in the Ganges of divine bliss of the Murti.

सूर्य को अपने पीछे रखकर अगर परछाई पकड़ने की कोशिश करे तो वह व्यर्थ ही है, उसी प्रकार महाराज तथा मुक्त को छोड़कर कितने भी साधन किये जाए, परंतु उनसे पार नहीं हो सकते।

With the sun at your back how can you chase your shadow? How can you reap the fruit of your spiritual endeavour if you ignore Maharaj and His Mukta?

शादी में लोग माणेकस्तंभ (विशिष्ट आकार का लकडी का टूकडा) रुप लकडी की पूजा करते हैं, किंतु महाराज की पूजा करे तो काम हो जाए।

At the time of wedding, people venerate a piece of wood called Manek-Sthambha. But if you venerate Maharaj your work will be accomplished without any hitch or hurdle.

साधनदशा वाले का खाना, पीना, सोना, बैठना आदि सब कुछ देह के आधिन होकर होता है; उसी प्रकार मुक्त की सभी क्रियाएँ महाराज के आधीन है।

In the life of seekers the actions of eating, drinking, sleeping, sitting etc. are governed by the needs and commands of the body whereas the activities and actions of the Muktas are subject to the divine will of Maharaj.

वसंतऋतु में आम्रफूल को खाने के उपरांत कोकिला का स्वर खुलता है; उसी प्रकार प्रकट महाराज एवं मुक्त के आश्रय से त्वरित कल्याण होता है।

During spring, if the cuckoo bird eats the mango-blossoms, its hoarse voice turns sweeter; likewise if you refuge in the manifest Maharaj and Mukta you will attain instant salvation.

जीव उच्च स्वर से कीर्तन बोले साज बज़ाए या व्यर्थ खर्च करे, किंतु उनमें अगर मूर्ति का स्मरण न हो तो उसकी वास्तविक कमाई कौड़ी तुल्य भी नहीं होती।

Even if you sing full-throated devotional songs and play instruments or spend money on celebrations without remembering Murti, you will not earn merit worth a penny.

सभी विरोध- 'मैं' और 'मेरा' में से ही उत्पन्न होते हैं। 'मैं' और 'मेरा' ही माया है; जहाँ माया प्रवेश करती है वहाँ भगवान का विस्मरण होता है।

All conflicts arise from 'I' and 'mine'; 'I' and 'mine' characterise Maya or delusions. God is forgotten the moment Maya enters and clouds our minds.

यह सर्वस्व भगवान का ही है एवं भगवान को ही अर्पण करना चाहिए।

We receive everything from God and it should be offered to God with a sense of gratitude.

संपत्ति मिलने पर वैराग्य ज्ञात होता है तथा आपत्काल से समझ ज्ञात होती है।

Detachment and renunciation are tested in prosperity whereas adversity tests man's wisdom.

खाने-पहनने की वस्तुएँ श्रीजीमहाराज की मूर्ति का प्रसाद कर ही स्वयं उपयोग में लें।

The food that you eat and the clothes you wear must be first offered to Shreeji Maharaj. They must be received as the sanctified things from Him.

भोजन करवानेवाले भक्त का अतिशय भाव हो तो उसका भाव देखकर भगवान उस मायिक वस्तु को दिव्य निर्गुणकर अंगीकार करते हैं।

When a devotee offers food with deep devotion and love to God, the Lord transforms the gross into a thing divine, devoid of all attributes and accepts it.

बिना फल के आम्रवृक्ष में फल नहीं आते, उसी प्रकार बिना मूर्ति के सर्व साधन बाँझ हैं, चाहे कितने ही जप, तपस्या, तीर्थ, व्रत, होम, हवन, यज्ञादि करे।

The rites and rituals of chanting the name of God, offering penance, going on a pilgrimage, observing holy vows, lighting holy fire, performing Yagna without faith in Murti are as useless and meaningless as the barren mango tree.

नाँव पर इतना विश्वास रहता है कि, बैठने के पश्चात् किनारे तक पार लगा देगी उसी प्रकार मुक्त का इतना विश्वास रखें कि वे अवश्य ही महाराज के सुख में पहुँचायेंगे।

If a boat can ferry us across a river and safely land us on the bank, rest asured, great Muktas will lead you to Maharaj and enable you to enjoy the divine bliss.

महान मुक्त के संग के द्वारा मायिक दृष्टि पलटकर दिव्य होती है पश्चात् माया या माया के कार्य दृष्टि में नहीं आते।

Once the film of delusions is removed and the divine sight is received, we no more see Maya or the things created by it. We can acquire such a divine sight only through communion with great Muktas.

जीव को मनपसंद कार्य करने का स्वभाव कई काल से है अतः दुःखी रहता है, परंतु महान मुक्त की अनुवृत्ति में रहे तो सुखी हो जाए।

Since ages, man has grown attached and become adicted to doing or possessing things which please his senses and therefore he finds life miserable. But if he can obey the Muktas and follow their advice, he will find happiness all around.

आत्मा शुद्ध हो तब ही महाराज की मूर्ति दृष्टिगोचर होती है, अगर जीव का 'मैं' भाव टल जाए तो सर्व दोष नाश हो जाते हैं।

If the ego can be dissolved, all confusions and delusions will end and sorrows melt. Those who are pure of heart can perceive the Murti of Maharaj.

महान मुक्त का योग तभी सार्थक है जब अवयव में परिवर्तन हो तथा महान मुक्त के सदृश गुण आए।

Even in the company of the spiritually accomplished saints if you fail to undergo a spiritual transformation and imbibe the qualities of the great, you have failed to be in tune with the Infinite, you have not grasped the meaning of what they preach.

श्रीजीमहाराज की मूर्तिरुप अमृत त्यागकर विष न खाएँ। मूर्ति के बिना सर्व विष सदृश है।

We should never ignore the nectar called the Murti of Maharaj and swallow the poison. Everything that is not associated with the Murti must be treated as poison.

षट्शास्त्र तथा अठारह पुराण पठन से कोई प्राप्ति नहीं है महान मुक्त के योग में ही देह के रहते मूर्ति की प्राप्ति होती है।

The study of six shastras (scriptures) and eighteen puranas (sacred works) will avail not. You can realise Murti while you are alive only by establishing rapport with great Muktas.

जिस किसी ने आज्ञा का लोप किया है वे महान होते हुए भी धर्म से पतित हुए हैं। अतः शुद्ध वर्तन करें।

Even those eminent religious leaders who had transgressed the commands of God had fallen from the path of righteousness. Therefore one should always remain pure and vigilant in the matter of faith.

देखनेलायक एक श्रीजीमहाराज ही हैं, वे ही संकट समय की संपत्ति तथा विपत्ति के समय की पूँजी हैं।

What is worth observing or seeing is Shreeji Maharaj alone; He is the hard cash in crisis, and treasure in the hour of need.

बिना महिमा की भक्ति का आखिरकार नाश होता है।

Devotion sans knowledge of glory of God is a worship in vain.

हमारे लिए 'स्वामिनारायण भगवान' ही मंत्र एवं जडीबुटी है ऐसा दृढतापूर्वक मानना चाहिए।

Let us firmly believe: Swaminarayan Bagwan is our only 'Mantra' and only panacea.

श्रीजीमहाराज तथा महान मुक्त के समीप रह सके इसके सदृश कोई औषध नहीं है।

There is no greater remedy or medicine than to stay close to Shreeji Maharaj and His Mukta.

बालक को अग्नि जलादि से उनके माता-पिता संभालते हैं उसी प्रकार श्रीजीमहाराज हमें काल, कर्म, माया से संभालते हैं।

The way parents protect their children from water, fire and other dangers, Shreeji Maharaj protects us against the attack from the delusions, time and action.

भगवान के भक्त हों उनकी वृत्ति तो भगवान के सिवा कहीं रहती ही नहीं; जिसकी परमेश्वर में वृत्ति नहीं रहती वह परमेश्वर का भक्त ही नहीं कहा जाता।

A devotee is one whose mind is firm in the devotion to God; one whose mind roams restlessly in other directions or deeds cannot be called a bhakta.

भगवान की कथा-कीर्तन रुप चुगना चुगकर पुनः भगवान के स्वरुप रुप घोंसले में ही विराम करें; अन्य किसी स्थान पर विराम न करें उसके वास्तविक विश्रांति नहीं मिलती।

After participating in the religious activities of katha-kirtan etc., one should rest in the luminous form of God; resting or relaxing at other places will not bring real respite.

दृढ सत्संगी वही कहा जाता है, जो नियम धर्म का पालन, भगवान के स्वरुप का निश्चय एवं भगवान के भक्त का पक्ष परिपूर्ण रुप से रखे।

A true satsangi is one who has attained perfection in the three essential attributes of Bhakti viz. observance of niyam-dharma -the injunctions laid down by Maharaj; firm faith in and irrevocable knowledge of God manifest in human form and deep attachment to God and His satsangi devotee.

आज्ञा नियम का यथार्थ पालन करना आदि पुरुष प्रयत्न के द्वारा पात्र तो स्वयं को ही होना पड़ता है, तत्पश्चात् ही महाराज एवं महान मुक्त कृपा करते हैं।

Each individual must strive to be worthy to receive God's bliss and this can be attained by appropriate adherence to and observance of the holy commands and divine injunctions established by Maharaj. Once we accomplish this, Maharaj and His Muktas will certainly bestow their grace and mercy upon us.

गृहस्थ-त्यागी का कोई मेल नहीं है; जिसकी समझ बडी उसे ही सबसे बडा हरिभक्त जानें।

There can be no comparison between a householder and an ascetic; therefore, one who has a greater understanding and knowledge of the glory of God is a greater devotee.

महाराज कहते हैं: भक्ति का, त्याग का, बैराग्य का, ब्रह्म का, समझ का या नियम पालन किसी भी प्रकार का अहंकार हमें पसंद नहीं है।

Shreeji Maharaj says, "We detest pride and arrogance: pride of devotion, pride of non-attachment, pride of renunciation, pride of having the attributes of Brahman, pride of knowledge and even pride of observing the Panch Vartman"

जब कई लोग भगवान के एकांतिक भक्त होते हैं तब कलियुग भी सत्ययुग में परिवर्तित होता है।

When many people attain the state of God's Ekantik Bhakta -state of God-realisation, we can see Kaliyuga (Dark Age) transformed into Satyug (Golden Age).

हरेक क्रिया में श्रीजीमहाराज की मूर्ति का पूर्वापर संबंध रखने के अभ्यास से दिव्य स्थिति होती है।

By cultivating the habit of keeping Shreeji Maharaj witness to all our actions and activities, we can attain the divine state of spiritual discernment.

जीव को माया से मुक्तकर उसके चैतन्य में मूर्ति बिराजमान कर दें यही आग्रह श्रीजीमहाराज तथा उनके मुक्त का है।

Shreeji Maharaj and the Muktas have one common goal: To free men from the delusions of Maya and install Murti in their illuminated soul.

सत्संग में कई लोग प्रयत्न, जागरण, जप, तपस्या करते हैं, किंतु मुक्तमिलन के सिवा मूर्ति-प्राप्ति रुप कार्य-सिद्धि नहीं होती।

Within the Satsang itself, so many people are seen wondering here and there. They mortify the flesh and spend sleepless nights. But so long you do not come into the contact of the Brahmanised Mukta, you will never accomplish your goal of reaching the Murti of Maharaj. All your japa and tapa, meditation and penance will be of no use without the blessings of the Mukta.

अगर सावधान होकर महान मुक्त के वचन का तत्काल पालन करे तो तुरंत ही मुक्तदशा की प्राप्ति होती है।

With total devotion and complete awareness if you can catch the undying truth which the God-realised saints and Muktas utter, and act accordingly, you too can attain quickly the state of Mukta.

समाधि, अखंड स्मृति, मूर्ति का साक्षात्कार क्रमशः उत्तम है अपितु उन सर्व में सर्वोत्तम मूर्ति में लीन होना है।

To remain ever-absorbed in the thoughts of God is better than trance, still better it is to have a glimpse of or communion with Murti but the highest spiritual state is that in which we are immersed in Murti and be one with our Lord.

हमारे जंगम तीर्थ सिद्धदशा वाले मुक्त हैं क्योंकि वे ज्ञान प्रदानकर मोक्ष करते हैं, फलस्वरुप दूसरी देह धारण नहीं करनी पडती।

Those who are spiritually accomplished i.e. those who have attained 'Siddhadasha' are the walking places of pilgrimage; they live in our midst, impart true knowledge and help us attain salvation i.e. break the cycle of birth and death.

महान मुक्त मूर्ति का सुख जीव को देते तो हैं किंतु उस सुख को ग्रहण करनेवाला शुद्ध पात्र न हो तो पुनः मूर्ति में चला जाता है।

The Brahmanised Mukta will bestow the grace of God on the seeker, but it will not last long if the receiver is not pure enough to retain it. It will go back to Murti if your heart is unclean.

देह में काल की विषमता हो तब 'स्वामिनारायण', 'स्वामिनारायण' नामक महामंत्र का जप करने से विषमता दूर हो जाती है।

When the soul is oppressed by the thoughts of death or other adversities, you will be able to overcome your sorrow and end the oppression by chanting the 'Maha Mantra' of Swaminarayan-Swaminarayan.

अंतकःरण को खोल सके ऐसा साधन या विधि एक ही है, वह है मुक्त का योग, उसे कभी न गवायें।

None other than Mukta can open the door of our conscience; there is no other means or method of driving out our darkness. Therefore, we should never lose sight of a Mukta dwelling in our midst.

मुर्ति सिद्ध करने के पश्चात् साधन का त्याग कर देना चाहिए उसकी अधिकता न रखें, जिसप्रकार चावल निकाल कर छिलके त्याग कर देते हैं।

The way we discard the husk and keep the rice, we should drop all means and methods of attaining communion with God once we accomplish our spiritual goal.

लोगों द्धारा कथित बीमारी वास्तविक बीमारी नहीं है, श्रीजीमहाराज के सिवा अन्य पदार्थ में प्रीति रहे यही वास्तविक बीमीरी है।

People say that a certain man has been ill, but to us illness or desease is that state in which man forgets Shreeji Maharaj and grows attached to other sense-objects.

नैमिषारण्य में तमोगुण या रजोगुण का कोई स्थान नहीं है, वहाँ तो जैसा बोते हैं वैसा ही उगता है। सेवा करने से सेवा उगती है एवं अपराध करने से वह उगता है।

In the fertile land of Naimisharanya whatever you sow shall grow; your crime against God and His creation, and your service to Him, both will bear fruit. Here one should transcend both tamo-guna and rajo-guna i.e. delusions and desires.

महाराज एवं मुक्त को साथ रखें तो किसी का डर न रहे तथा कोई मलिन तत्त्व भी समीप न आ सके, जिस प्रकार सूर्य हो वहाँ अंधकार हो ही नहीं सकता।

Darkness does not descend where the sun shines. Evil and fear can never approach you if you have Maharaj and His Mukta with you.

जिस प्रकार कमल के फूल को पानी स्पर्श नहीं करता उसी प्रकार महान संत के समीप माया जीव का पराभव नहीं कर सकती।

The way water does not wet a lotus, maya or delusions cannot defeat you if you are in the company of the God-realised Muktas.

सत्संग में कई महान मुक्त के वचन में विश्वास लाकर स्वयं का कार्य पूर्ण कर मोक्ष प्राप्ति करते हैं; तथा कई पुराने होने का मान तथा बीना विश्वास के कारण भटकते हैं।

In the satsang fellowship some people with firm faith in the advice of the Muktas readily reap the harvest of their communion with the God-realised souls and return home fully satisfied, but others with false-pride in the orthodoxy and doubts in the manifest Mukta go to their destruction or wonder in vain.

मन, वचन एवं देह के द्धारा भगवान संबंधी शुभ क्रिया करे यह भागवत धर्म है, किंतु यह धर्म मुक्त के प्रसंग से आता हे।

Bhagwat Dharma enjoins upon us to perform and dedicated all our actions of thought, word and deed to God. we can attain this dharma or sense of duty only through communion with Muktas.

जिस प्रकार मोर सहित ही पंख शोभायमान हैं, किंतु बिना मोर के पंख किस काम के? उसी प्रकार कारण मूर्ति बिना कोई बात पूर्ण नहीं होती।

The way feathers have no beauty without a peacock nothing is complete without the divine Murti, the cause behind all causes.

पंचनियम के विरुद्ध वर्तन करनेवाले ढंभी एवं विषयी ही होते हैं उनका स्वपच तुल्य त्याग करना चाहिए।

A man who acts against the five commandments -Panch Vartman of God is a lustful hypocrite; avoid him and shun his company the way you will avoid the filth.

सर्व पदार्थ मान-अपमान में समभाव एवं
सहनशीलता ही संतता है।

Even-tempered when honoured or
insulted and tolerant of all is said to be
a saint.

महाराज एवं महाराज के मुक्त की कृपा तथा पुरुष प्रयत्न के द्वारा ही अंतःकरण शुद्ध होता है।

Serenity and inner-purification need human effort and divine grace of Maharaj and His Muktas.

क्रोध, मान, ईर्ष्या एवं कपट इन चारों को संत के संग न रखे तो कदापि आसुरी बुद्धि नहीं होती।

If one with constant awareness never allows the four flaws called anger, pride, envy and intrigue to affect his mind, while in the company of an accomplished saint, he will never assume 'asuri-buddhi' or evil mind.

भ्रमर और संत में समानता है, भ्रमर पुष्प पर गुंजन करता है तथा पुष्प की सुगंध ग्रहण करता है। संत महाराज की मूर्ति के समक्ष क्रीडा करते हुए आनंद करते हैं।

The way honey-bees fly and buzz over the flowers and collect fragrance and nectar, saints and devotees always remain happy and rejoice in the presence of the Murti of Maharaj.

परमपद रुप अनादि मुक्त की स्थिति प्राप्त करने के हेतु निर्वासनिक होना अत्यावश्यक है जो महान सत्पुरुष के द्धारा ही संभव है।

When you free yourself totally from hankering after the addictions of sense-objects with the help of God-realised saint then only you can attain the Param Pada or the highest spiritual state of Anadimukta.

तीव्र वैराग्य, आत्मज्ञान तथा भक्ति इनका भी अगर मान हो जाए तो महान गुण की प्राप्ति नहीं होती, महान गुण की प्राप्ति तो महान सत्पुरुष के समागम के द्वारा मान टल जाए तो होती है।

Pride of intense non-attachment or renunciation, pride of self-knowledge and pride of deep devotion come in the way of attaining great qualities or the real enlightenment. One can get rid of false pride and attain virtues through communion with very eminent Brahmanised saints.

ध्यान करना श्रीजीमहाराज की प्राप्ति का सर्वोत्तम साधन है अगर वह श्रीजीमदाराज के स्वरुप का ज्ञान प्राप्त होने के पश्चात् करें तो किसी प्रकार का विक्षेप नहीं होता।

Meditation is superior to all other modes of worship but if we meditate with right knowledge regarding Personal Form of Shreeji Maharaj and deep devotion to Him, nothing will distract us from our meditation.

सारा दिन आत्मा संबंधी किया हुआ चिंतवन क्षणमात्र में समाप्त हो जाता है, अगर क्षणमात्र स्वयं को देहरुप मानकर विषय का चिंतवन करे।

(Even for a moment if you slip into the bonds of body and allow yourself to be carried away by lustful desires, your entire day's meditation and knowledge of Atman acquired through it will vanish in no time.

श्री स्वामिनारायण डिवाइन मिशन क्यों ?

श्री स्वामिनारायण भगवान के सर्वजीवहितावह संदेश अनुसार मानव जाति के श्रेय एवं प्रेय के लिये-

(क) सेवा - सदाव्रत के आदर्शानुसार बिना भेदभाव के आर्थिक मुसीबत का अनुभव करते भाईबहनों को आवश्यक सहायता पहुँचाना;

(ख) आरोग्य प्रसार की मार्गदर्शक व्यवस्था तथा रोगोपचार के परिचर्या केन्द्र-औषधालय की स्थापना-चलाना, अथवा ऐसा कार्य करती संस्था को सहायता करना;

(ग) आत्मिक शांति तथा मानवता को प्रसारित करते मंदिर, सत्पुरूष के स्मारक केन्द्र आदि का निर्माण-निर्वाह-विकास करना;

(घ) जीवन रचना में उपयोगी साहित्य एवं कला के विकास कार्य को प्रोत्साहित करना;

(च) सम्यक् अभ्यास के लिये पुस्तकालय, संग्रहालय, संशोधन केन्द्र की स्थापना - चलाना अगर ऐसे ईकाई को सहायता देना;

(छ) सर्व समन्वय स्थापित हो ऐसे सांसारिक एवं तत्त्वज्ञानविषयक प्रकाशन प्रसिद्ध करना तथा उनके द्वारा जनसमुदाय का ऊर्ध्वगामी विकास में सहायक होना;

एवं इस प्रकार :

(१) सामाजिक जीवन के आधार तुल्य सदाचार तथा नीति की कक्षा बलवान हो ऐसी प्रवृत्ति का आयोजन करना;

(२) समाज में ऐक्य एकता तथा आपसी सहृद्भाव वृद्धित हो, विश्वबंधुत्व की भावना का विकास हो एवं विसंवादिता दूर हो ऐसे कार्यक्रम देना;

(३) विश्व के धर्म तथा पक्षो के बीच संवादिता का जतन हो इसके लिये सर्वधर्मीय परिषद का आयोजन करते हुए आध्यात्मिक एवं सामाजिक उत्कर्ष को गति देना;

ऐसे सुआयोजित कार्यक्रम तथा प्रवृत्ति द्वारा परिपूर्ण भगवत्स्वरूप की प्राप्ति की ओर मानव समुदाय सर्वांगी विकास को प्राप्त कर गतिमान हो, ऐसा मिशन का शुभ आशय है।

अनादिमुक्त की कृपा से
आत्मा-परमात्मा का संग करने का
यथार्थ ज्ञान हो यही सत्संग है.

- पूज्यश्री नारायणभाई